786/92-110

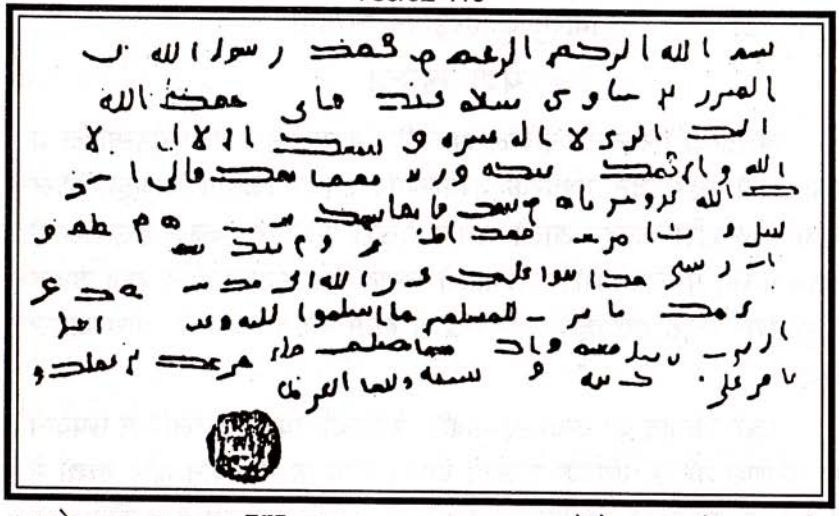

सरवरे कायनात मुहम्मद[स.अ.व.] का खत मुबारक का नुस्खा जो हैदराबाद के सालारजंग म्युज़ियम में मौजूद है। ये खत आप स.अ.व. ने बहरेन के राजा को लिखा था।

سرور کائنات محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ کا خط مبارک کا نسخہ جو حیدرآباد کی میوزیم میں سالارجنگ موجود ہے

آپ صلی اللہ علیہ وآلہ نے اس خط کو بحرین کے راجا کو لکھا تھا۔ والحمد للہ علی وصولہ الینا وله الحمد

١١٠ / ٧٨٦ / ٩٢

بسم الله الرحمن الرحيم

٥ ١١١ م ١١١ ٢ ١١١١ م ٦

الله لا إله إلا هو

قال الله سبحانه وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً فِي عَقِبِهِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ زخرف ٢٨

كِتَاب

دَوْرِ مُحَمَّدِي كے چھٹے اِمَامِ حَق

مَوْلَانَا إسْمَاعِيل بْن مَوْلَانَا جَعْفَر الصَّادِق عَلَيْهِمَا السَّلَام

كاتب مؤلف العليم الجيد الدرجة الناشط في خدمة الدعوة اللہ N.K.D. سابق استاذ جامعہ سیفیہ سورت

ناشر تبیلیم اشاعت اسلامی تعلیم (اودے پور) ٦٦/٢ ذاکر حسین مارگ بوہرہ واڑی اودے پور راج

یہ کتاب کریمہ اسماعیلی، فاطمی طیبی داؤدی فرقے کے لیئے مخصوص ہے

تذکرۂ میلاد الامام الطیب ابی القاسم امیر المؤمنین علیہ السلام ٢٣ ربیع الآخر ١٤٢٢ھ سوموار 25/6/2001ء

786/92-110

बिस्मिल्लाहिर्रहमान निर्रहीम

पेश लफ्ज़

अलहम्दो लिल्लाहि रब्बिल आलमीन व सलामुन अला मुहम्मदिन व अला आले मुहम्मदिन वबारिक वसल्लिम। असल किताब "वज़्कुर फिल किताबे इस्माईल" मरहूम आली जनाब शैखुल फाज़िल मुकद्दस हसन अली साहब ने उर्दू में लिखी थी। उसे आली जनाब शेख अहमद अली राज साहब ने मुख्तसर करते हुए कुछ खास–खास बातों की वज़ाहत के साथ वापस लिखा।

उसी किताब को बन्दा–ए–हकीर ने हिन्दी देवनागरी लिपि में छपवाने की कोशिश की है, क्योंकि दाऊदी बोहरा कौम के नौजवान और बच्चों में से अब ज़्यादातर को उर्दू लिपि में पढ़ने की न तो जानकारी है न शौक, उर्दू ज़बान तो फिर भी समझ लेते हैं। इसीलिए इसे देवनागरी में लिखी गई है ताकि बच्चों व नौजवानों को अपने इस्माईली तारीख की हकीकत व अकीदे की जानकारी हासिल हो।

अरबी इबारत को हिन्दी में हूबहू लिखने में एक मुश्किल ज़बर को लिखने व तलफ्फुज़ (उच्चारण) में आती थी। जैसे– "अशहदो अनला इलाह॰ इल्लल्लाहो, अशहदो अन्ना मोहम्मदन रसूलुल्लाहि" । اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

यहाँ पर हिन्दी में सही उच्चारण बिना उस्ताद के बहुत मुश्किल है इसलिए मैने एक नया तरीका निकाला, वह यह कि जहाँ–जहाँ पर उच्चारण में ज़बर (َ) के लिए 'अ' की मात्रा 'ा' को आधा '॰' करके लिखा है ताकि सही तलफ्फुज़ के साथ पढ़ने में आसानी हो, क्योंकि अरबी के (مُومِن) को हिन्दी में 'मुमिन' लिखने में कोई दिक्कत नहीं होती मगर (مُومِنَة) 'मुमिना' और (مُومِنَ) 'मुमिन॰' को हिन्दी में लिखते वक्त दोनों में फर्क (तमीज़) करना बहुत मुश्किल होता था इसलिए यह नया तरीका इस्तेमाल किया है। उम्मीद है कि यह नया तरीका इन्कलाबी तौर पर कारगर साबित होगा और आगे अरबी को हिन्दी में लिखने वाले हज़रात को बड़ी आसानी होगी।

वैसे तो मैने इस छोटी सी किताब को सिर्फ देवनागरी में नकल किया है मगर इसमें जो लिखा है उसको पूरी तहकीक करने के बाद लिखा है। किसी की दिल आज़ारी करना मेरा मकसद नहीं है।

लिखावट में पूरी सावधानी बरती गई है फिर भी गलती हो गयी हो तो पढ़ने वाले दुरुस्त करके हमें इत्तलाअ करने की ज़हमत करें।

इस किताब को प्रिन्टिंग करने में मेरे पाँच नेक दोस्तो व दो बहनों ने माली इमदाद फराहम की, खुदावन्दे आलम उनकी हर मुराद पूरी करें व जज़ाएखैर अता करें। आमीन! जिन्होंने हाज़िर–गैरहाज़िर तौर पर मदद की उन सबका बहुत–बहुत शुक्रिया। उन सबके लिए बारगाहे इलाही में जज़ाए खैर के लिए दुआ की इल्तमास है।

सज्जाद हुसैन खाराघोड़ा वाला
30–31, गुलाबेश्वर मार्ग, खटीकवाड़ा,
नाई वाड़ा के पास, उदयपुर
फोन : 525216

786 / 92–110

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्हम्दो लिल्लाहि व सलामुनअला इबादिहिल लज़ीनस्तफा। अअल्लाहो खैरुन अम्मायुशरिकून। अम्मा बअद! सरवरे कायनात मुहम्मदुन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलिही, नबीये करीम[स.अ.व.] मौलाये कायनात अलीय्युन वलीयुल्लाह सलामुल्लाहि अलैहि व सलवात आप के वसी हकीम, रसूले करीम[स.अ.व.] ने फरमाया– "या अलीय्युन अना व अन्त' अबवा अलमूअमिनीन" तर्जुमा– ए अली मैं और आप मूअमिनीन के माँ बाप हैं। और फरमाया "इन्नमल मूअमिनुन' इखवतुन अबुहुमुन्नूरो व अम्मुहमर्रहमतो" बेशक मूअमिनीन भाई हैं और उनके बाप नूर और माँ रहमत है, और फरमाया "अल हसनो वल हुसैनो इमामा हक्किन कामा अवक़अदा व अबुहुमा खैरून मिन हुमा" यानि हसन[अ.स.] और हुसैन[अ.स.] हक के इमाम है (या ये कहा कि जवानाने जन्नत के सरदार है) चाहे बैठे (सुलह करे) या उठे (जिहाद करे) और इन दोनों के बाप (अली[अ.स.]) इनसे अफज़ल है। मतलब कि ये दोनों इमाम है और अली[अ.स.] वसी है, वसायत का मकाम इमामत से अअला और नबुवत का मकाम वसायत से अअला है। (नबी यानि बाप, वसी यानि माँ, अइम्मा यानि औलाद, अव्वल औलाद हसन[अ.स.] अव्वल इमाम हैं।) इस तरह बिल्कुल रोज़े रोशन की तरह वाज़ेह हुआ इमाम हसन[अ.स.] दौरे मुहम्मदी के इमाम–ए–अव्वल है और आप के बाद आप के नज़ीर किसा–ए–ततहीर (चादरे ततहीर) में आप के शरीक अबा–ए–इमामत नस–ए–नबवी के मुताबिक दूसरे इमाम हुसैन[अ.स.] आप के बाद तीसरे इमाम ज़ैनुलआबिदीन[अ.स.] आप के बाद चौथे इमाम मुहम्मदुल बाकिर[अ.स.] आपके बाद पाँचवे इमाम जअफरुस्सादिक[अ.स.] हैं। आप के बाद साबिक (पहले के) दस्तूर के मुताबिक आप की नसजली से छठे इमाम ईस्माईल अलैहिस्सलाम है। आप के बाद सातवें इमाम मुहम्मदुश्शाकिर[अ.स.] है। सलामुन अलैहि व सलवात। दौर मुहम्मदी के ये पहले सात इमामो के सातरा (असबुअ) जिसका नाम अतिम्माअ है इनके बाद नस–ब–नस काइम होने वाले चौदहवे इमाम मोइज़[अ.स.] इमाम यानि दूसरे सातरे के आखिरी इमाम हैं। दूसरे सातरे का नाम खुलफाअ है इनके बाद नस–ब–नस इक्कीसवे इमाम तैय्यब[अ.स.] जो तीसरे सातरे के आखिरी इमाम है। तीसरे सातरे का नाम अशहाद है। अब्दाल' सुम्मा अब्दाक' ततबद्दलुल अशखासो

व हुवग्बिअैनिही ज़ाकल कदीमुल वाहिदुल मुतग्अज़्ज़िलो। अशखासे इमामत की तब्दील होती रहती है। एक के बाद दूसरे (अब्दाल के बाद अब्दाल) आते रहते हैं और अल्लाह सुब्हानहु सबको कायम करने वाला फैज़ ताईद बख्शने वाला तो वही एक ही है। वही कदीम एक अज़ली हय्यो कय्युम एक ही है और अइम्माअ.स. उसी के मज़ाहिरीन है। अल्लाह सुब्हानहु के अस्माए हुस्ना जो निन्यानवे (99) है। निन्यानु इमामो के बाद उनके मुसम्मा मौलानल काइम साहिबे कयामतअ.स. तशरीफ लाऐगें। व अशरफतिल अरदो बिनूरे रब्बिहा तर्जुमा– ज़मीन अपने रब के नूर से रोशन हो जाएगी जुल्म व ज़ोर के बाद अदलो इन्साफ से भर जाएगी। अजल लल्लाहो फरजहु।

कलिमतुत्तोहीदि कलिमतुल इमामते

व इज़कालग इब्राहीमो लिअबीहि व कौमिही इन्ननी बराउम मिम्मा तअबुदून० इल्लललज़ी फतरनी फइन्नहू सयहदीन० व जअलहा कलिमतन बाकियतन फी अकिबिही लअल्लहुम यरजिऊन०सूराए अज़्ज़ुखरुफ। आ. 26–27–28 तर्जुमा– और जब इब्राहीमअ.स. ने अपने बाप और कौम को कहा कि मैं बेज़ार (बरी) हूँ उससे जिसकी तुम पूजा करते हो मगर उस अल्लाह से बेज़ार नहीं जिसने मुझे पैदा किया। वही अल्लाह मुझे सीधी राह बताने वाला है। और इस कलमाए तौहीद (कलमाए इमामत) को आप के अकिब (पीछे आने वाली औलाद) में बाकी रखा। ताकि ये लोग (इब्राहीमी मिल्लत) उनकी तरफ रुजुअ करे (लौटे)। मतलब के इब्राहीमअ.स. आज़र और उसकी कौम की इबादत और उसके मअबूद से बेज़ार हुए। ऐसा बताया और कहा कि– मैं तो अल्लाह का बन्दा हूँ, अल्लाह ही मेरा फातिर (पैदा करने वाला) और मेरा हादी (रहबर) हैं। इस इब्राहीमी कलिमाए तौहीद (कलिमतुल इमामत) को अल्लाह ने आप के अकिब मैं बाकि रखा ताकि लोग (कुफ्फार) तौहीद की तरफ रुजुअ करे। इस कलिमा में बातिल से बराअत और हक की वलायत वाज़ेह है। इस कलिमा का मफहूम तमाम अन्बिया–ए–किरामअ.स. के कलिमा में आ जाता है। या क़ौमिअबुदुल्लाहग मालकुम मिन इलाहिन गैरुहु... तर्जुमा– ऐ मेरी कौम तुम अल्लाह की इबादत करों इसके सिवा तुम्हारा कोई मअबूद नहीं। हमारे प्यारे नबीये करीम मोहम्मदस.अ.व. तमाम

नोटः मौलाना इब्राहीमअ.स. मुस्तकर नबीये अकरम थे आपके वालिदे हकीकी (जन्म देने वाले बाप) मुस्तकर इमाम मौलाना तारुख थे, आज़र नहीं, आज़र आप के नाना या काका वगैरह थे।

अन्बिया[अ.स.] के कलिमात से बेहतर कलिमा लाए कि "ला इलाहा इलल्लाहो" तमाम कायनात एक तरफ और ये कलिमतत्तुतैय्यबा एक तरफ बल्कि सब से बढ़ कर, ये है कलिमतुत्ततौहीद। ये कलिमतुत्ततौहीद ला इलाहा इल्ललाहो–मुहम्मदुर्ररसूलुल्लाह के बगैर बेकार है, गैर फायदामन्द है। मोहम्मदुल मुस्तफा[स.अ.व.] की रिसालत के इकरार बगैर अल्लाह की इलाहियत का इकरार मकबूल नहीं है। इलाहियत का इकरार तो सबके सब करते हैं, इबलीस भी तो अल्लाह को मानता था। रब्बे रब्बे की तस्बीह करता था। लेकिन अल्लाह के खलीफा (नबी) आदम[अ.स.] को मानने से इन्कार करता था। इसीलिए वो जन्नत से निकाला गया और वो मलऊन हुआ।

साबित हुआ कि अल्लाह के खलीफा का इन्कार करना अल्लाह को इन्कार करना हुआ। तौहीद के कलिमा के साथ इमामत का कलिमा लाज़िम मलजूम है। ये कलिमतुत्तौहीद कलिमतुल इमामते इब्राहीमी अकिब (पीठ या नस्ल) में ता कयामत बाकी रहेगा। अल्लाहुम्मा सल्लेअला मोहम्मदिन व अला आले मोहम्मदिन कमासल्लेता अला इब्राहीमा व अला आले इब्राहीमा इन्नका हमीदुन्नमजीद। इब्राहीमी नस्ल में मोहम्मद व आले मोहम्मद है। मोहम्मद के अक्ब (नस्ल) में ता–कयामत कलिमतुल इमामत बाकी रहेगी। वजअलहा कलिमतमबाकियतन फी अकिबिही लअल्लहुम यरजिऊन० पारा 25, सूरए अज़्ज़ुखरूफ, आयत 48।

यही कलिमतुल इमामत के बारे में मौलाना हातिम मुहिय्युद्दीन[कुदसुहु] (दौरे सतर के तीसरे दाई) के माजून मौलाना मोहम्मद बिन ताहिर[कुदसुहु] अपनी किताब सुबुलन नजात में लिखते हैं कि– इमामों की जिस्मी विलादत और तनासुल (नस्ल–औलाद) आम इन्सानों की तरह होती है, उनके जिस्म भी खून और गोश्त वाले होते हैं। हद से बढ़ कर बात करने वाले (बढ़ा चढ़ा कर बताने वाले) लोग जो कुछ उनके मुतल्लिक कहते हैं वो गलत है। दाई मोइय्यद शीराज़ी[कुदसुहु] लिखते हैं कि औलियाउल्लाह भी ज़मीन की मिट्टी से पैदा होते हैं। उनके जिस्म पर भी कोनो फसाद (बनना बिगड़ना) आता रहता है। खाने–पीने पर उनका आधार रहता है। दर्द गम, बीमारियाँ भी उनको होती है और आखिर में उनको मौत भी आती है। गाली लोग कहते हैं कि वो तो खुदा है, शिहमी (आम लोगों की) आँख उनको नहीं देख सकती वगैरह वो बिल्कुल गलत है। अलबत्ता इन इमामों के जिस्म उनके फज़्लो शरफ और पाकीज़गी की वजह से दूसरे आम जिस्मों से मुमताज़

(निराले) होते हैं जैसे– पत्थरों में लाल याकूत, याकूत मअदिनी (खनिज) की हैसियत से पत्थर की तरह है मगर याकूत आम पत्थर से आला अशरफ है इसी तरह इमाम जिस्मानी हैसियत से आम इन्सानो के जैसे हैं मगर उनके शरफ, फज़्ल, हसब–नसब से मुमताज़ है, अअला व अफज़ल है...

अब जब इमाम आपके वालिद–माजिद इमाम की पुश्त में आते हैं तब आप उनके पैदा होने की खुशखबरी सुनाते हैं। मिसाल के तौर पर अट्ठारहवें फातिमी इमाम मौलानल मुस्तनसिर बिल्लाह[अ.स.] के दो बेटे इमामत के मुत्तलिक झगड़ते हुए आपके सामने आये (इन दोनों में एक निज़ार थे जिसको आगाखानी ईस्माईली खोजे अपना इमाम मानते हैं) तो आपने फरमाया कि तुम झगड़ा मत करो तुम्हारे में से कोई भी इमाम नहीं है इमाम तो अभी यहाँ (आपने अपनी पुश्त की तरफ इशारा करके फरमाया) है। और फरमाया कि ये तो अल्लाह के इख्तियार की बात है। इसी तरह इमाम जअफरुस्सादिक[अ.स.] को जब इमाम के मुत्तलिक सवाल हुआ तो आपने फरमाया कि लोग ऐसा गुमान करते हैं कि इमाम को कायम करना हमारे इख्तियार में है? नहीं! खुदा की कसम, ये तो खुदा के इख्तियार में है। अल्लाह सुब्हानहु का कौल है कि– "व रब्बुक यखलुको मा यशाओ व यख्तारो मा कान लहमुल खैरतो०" तर्जुमा– और तुम्हारा रब चाहे वो पैदा करे और इख्तियार करे लोगों को इख्तियार करने का हक नहीं।

अब जब इमाम पैदा होते हैं तो कामिल इमाम होते हैं नाकिस (नुक्स वाले) नहीं। ये नौज़ायदा इमाम तो अपने वालिद माजिद इमाम की मिस्ल ही होते हैं। "अल इमामों युअलदो इमामा" इमाम इमाम बनके ही पैदा होते हैं ये तो पैदायशी इमाम होते हैं ये तो अल्लाह की करामत यानि इमामत के मुस्तहिक होकर ही पैदा होते हैं चाहे वो बच्चे हो। जिस तरह कोई इन्सान का बच्चा जो कामिल तन्दुरुस्त पैदा हुआ तो वो अपने वालिद की तरह कामिल ही होता है फिर वो बच्चा क्यों न हो उसके बचपन में उसका वालिद मर जाए तो ये बच्चा मरने वाले वालिद को वारिस होता है उसका बचपन उसको उसकी विरासत से रोकता नहीं अलबत्ता ये है कि ये अभी बच्चा है तो मरने वाला वालिद उसके लिए कोई कफील मुकर्रर कर जाए ताकि वो कफील उसके माल से उसकी कफालत करे और जब ये बच्चा बालिग हो जाए तो उसकी विरासत उसको सौंप दे। इसी शाकिलत पर किसी इमाम बुलूग (बालिग होने से) पहले उसके बचपन में उनके वालिद

माजिद साबिक इमाम के इन्तकाल का वक्त करीब आ जाये तो इस वक्त आप ऐसे शख्स को अपने नाबालिग बेटे इमाम के लिए कफील मुकर्रर करे के ये कफील उसकी परवरिश करे और उसकी जगह में ज़ाहिरी शरीअत, बातिनी दावत, नमाज़, खुत्बा, अहद व मीसाक, नजवा, उमूरे ममिलकत वगैरह उमूर की तवल्ली करे यहाँ तक कि वो इमाम जो बच्चा थे बालिग हो जाए और ममिलकत व दावत के कामकाज खुद संभाल ले, इस तरह अमल करने से आम लोगों को (ज़अफा) को सुकून व इत्मिनान रहे सबब के इमामत के भेद (राज़) से आम लोग बेखबर होते हैं इसलिए कफील की ज़रूरत होती है हालांकि इमाम पैदाइश के वक्त से ही कामिल इमाम होते हैं। आप के वालिद माजिद साबिक इमाम आप पर नस करके दअवत के लोगों को आगाह करते हैं कि मेरा ये बेटा इमाम है अल्लाह ने इसे इमाम बनाया है मैने इनको इमामत यानि नूरानी हेकल (अरवाहे मुकद्दस का मजमअ) सौंप दी है। मेरा ये बेटा (चाहे बच्चा ही क्यों न हो) दीन के तमाम मरतबे का मालिक है लिहाज़ा इस मनसूस इमाम की तब्दील कभी नहीं हो सकती। ईसा रूहुल्लाह[अ.स.] बचपन में ही नबुवत के मालिक थे। इमाम अली बिन हुसैन[अ.स.], इमाम तैय्यब[अ.स.] बचपन से ही इमामत के मालिक थे, बचपन के सबब कफील कायम करना पड़ा, मौलाना ईस्माईल[अ.स.] बिन मौलाना इब्राहीम खलीलुल्लाह[अ.स.] के बेटे मौलाना केज़ार[अ.स.] छोटे थे। मौलाना ईस्माईल[अ.स.] ने आप पर नस की और लूत[अ.स.] को उनका कफील बनाया। किताब मजमउल बेहरेन में हैं कि मौलाना ईस्माईल ज़बीहउल्लाह[अ.स.] भी अपने वालिद माजिद इब्राहीम खलीलुल्लाह[अ.स.] की ज़िन्दगी में इन्तकाल कर गये इसके साथ इमामत आपके बेटे मौलाना केज़ार[अ.स.] को ही मिली हालांकि दादा बाप इब्राहीम[अ.स.] अभी ज़िन्दा थे इसी तरह दौरे मुहम्मदी के छठे इमाम मौलाना ईस्माईल[अ.स.] के बेटे इमाम मोहम्मदुश्शाकिर[अ.स.] ही इमाम बने हालांकि आप के दादा बाप मौलाना जअफरुस्सादिक[अ.स.] ज़िन्दा थे। इमामत की चाल मुस्तकीम (सीधी) होती है बाप के बाद बेटा ही इमाम होता है। मौलाना जअफरुस्सादिक[अ.स.] ने फरमाया कि– "मा बदल्लाहे कमा बदालिह फी इब्नी ईस्माईल" और ऐसा भी फरमाया– "फी अबी ईस्माईली" मतलब कि मेरा बेटा ईस्माईल और मेरा बाप ईस्माईल बिन इब्राहीम के मुत्तलिक अल्लाह की एक नई हिकमत नई बात हुई कि दोनों अपने अपने बाप की ज़िन्दगी में ही वफात पा गये। दोनों इमाम होते हुए इमामत की

ज़िन्दगी में इमामत का अमल न कर सके। लिहाज़ा इमामत की चाल कहकरा (उल्टी) नहीं सीधी है। हारून[अ.स.] के बेटे फिनहास[अ.स.] छोटे थे। हारून[अ.स.] ने फिनहास[अ.स.] पर नस की और यूशअ[अ.स.] को कफील बनाया इसी तरह इमाम हुसैन[अ.स.] ने इमाम अली ज़ैनिलआबेदीन[अ.स.] के लिए मोहम्मद[र.अ.] (हनफिया) बिन अली[अ.स.] को कफील बनाया। मौलाना ईस्माईल[अ.स.] बिन मौलाना जअफरुस्सादिक[अ.स.] ने अपने बेटे मौलाना मोहम्मदुश्शाकिर[अ.स.] के लिए मेमुनुलकद्दाह को कफील बनाया, दसवें फातिमी इमाम मौलाना हुसैनुल मस्तूर[अ.स.] ने मौलाना अब्दुल्लाह मेहदी[अ.स.] के लिए आपके चाचा और ससुर सईदुल खैर को कफील बनाया, मौलाना आमिर[अ.स.] ने अपने बेटे मौलाना तैय्यब[अ.स.] के लिए अब्दुल मजीद को कफील बनाने के साथ–साथ उनको ज़ाहिरी ममिलकत का हाफिज़ बनाया। जिस तरह मौलाना जअफरूस्सादिक[अ.स.] ने आपके पौते मौलाना मोहम्मद बिन मौलाना ईस्माईल[अ.स.] को बचाने की खातिर आपके दुश्मन अबुल दवानीक को हरम–हश्म की कफालत सौंपी थी, मगर अब्दुल मजीद और अबुल दवानीक दोनों अपने–अपने ज़माने में इमामत और खिलाफत के दावेदार बन बैठे (सकीफा वालों की मिस्ल मुद्दई हो गये)। उनके गलत दावों से हकीकी इमाम की इमामत बातिला नहीं हो जाती और उनके गलत अमल से इमाम जअफरुस्सादिक [अ.स.] व इमाम आमिरबिल्लाह[अ.स.] की इस्मत पर कोई हर्फ नहीं आता। जिस तरह आदम[अ.स.] और हव्वा[अ.स.] ने मअसियत की तो उनकी मअसियत से अल्लाहसुब्हानहु की कुदरत पर कोई कलाम नहीं हो सकता, ये हकीकत की बात है इसे खूब अच्छी तरह समझ लो। अब कोई ये मुकाबला करे कि जिस तरह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह[स.अ.व.] छठे नातिक थे और आपके बाद आपका कोई बेटा ज़िन्दा न रहा तो आपने अपने चचा के बेटे अली इब्ने अबीतालिब[अ.स.] को कायम किया इसी तरह तीसरे सातरे के छठे इमाम मौलाना आमिर[अ.स.] ने भी इमाम तैय्यब[अ.स.] के चचा के बेटे अब्दुल मजीद को कायम किया। इस तरह मुकाबला मिलाना बिल्कुल गलत है इस तरह कहना अल्लाह की किताब के खिलाफ है, क्योंकि हक के लोग जानते हैं और ये बात हक है कि इमामत ऐसी रस्सी है कि वो कभी नहीं टूटती। रस्सी क्या है? असल में रस्सी का मतलब है अल्लाह की किताब यानि कुरआन और इतरते रसूल[स.अ.व.] साथ–साथ जो कि इमाम के तौर पर हमेशा ताकयामत बाकी रहेगी। ये इमामत तो बाप के बाद बेटे में यके बाद दिगर

नस–ब–नस इस खिल्कत के शुरूअ से कयामत कुबरा तक जारी और सारी रही थी, रही है और रहेगी। अल्लाहसुब्हानहु फरमाता है कि– "वजअलहा कलिमतम बाकियतन फी अकिबिह" ये इमामत इब्राहीम खलीलुल्लाह अ.स. के अक्ब (नस्ल) में बाकी रहने वाली है। अलबत्ता रिसालत का अम्र मर्तबा इमामत के मर्तबा के खिलाफ है। ये रिसालत का मर्तबा तो बहुत ही अअलातरीन है। एक मुद्दतदराज़ के बाद अल्लाहतआला शख्से फाज़िल को चुनता है जो इस मर्तबा के मालिक होते हैं, ये मर्तबा रिसालते कुल (सर्वेसर्वा) है और मर्तबा इमामत जुज़ (हिस्सा) है। नुतकाए मुर्सलीन में ऐसे नातिक हुए हैं जिनका कोई अकिब (औलाद) नहीं। क्योंकि ये रिसालत का मकाम फर्दानियत का मकाम है। अक्ले अव्वल की तरह इनकी शान है। छठे नातिक मोहम्मदुलमुस्तफा स.अ.व. ने अपने चचा के बेटे अली इब्ने अबीतालिब अ.स. पर खास वसायत और इमामत की नस की थी, रिसालत नबुवत की नहीं, सबब के ये इमामत व वसायत का मर्तबा आप के नज़दीक बतौर वदीअत अमानत था, तो आपने इलाही फरमान के मुताबिक कि "या अय्युहर्रसूलो बल्लिग माउन्ज़िल इलैक मिन रब्बिक" ऐ रसूले पैगम्बर इलाही पैगाम पहुँचा दो अली को वसायत, इमामत का मर्तबा सौंप दो रिसालत नबुवत का मर्तबा नहीं जिस रिसालत नबुवत के साहिब आप हो। अब ये इमामत अली अ.स. और अली अ.स. के फरज़न्दों में सातवें नातिक के आने तक चालु रहेगी। और सातवें नातिक रिसालत और नुत्क के मकाम को हासिल करके रूह के मकाम में हासिल होंगे। इनके पहले के छः नुत्काअ जिस्म के मकाम वाले थे। छठे नातिक मोहम्मदुलमुस्तफा स.अ.व. ने अपने चचा मौलाना अबुतालिब अ.स. के बेटे मौलाना अली अ.स. पर नस की इसकी ये हकीकत है ये नहीं के आपका बेटा ज़िन्दा नहीं था इसलिए अली अ.स. पर नस की। इस तरह नबुवत रिसालत और इमामत वसायत का फर्क वाज़ेह हुआ और अल्लाहसुब्हानहु ने मोहम्मदुलमुस्तफा स.अ.व. को ये शरफ दिया कि आपकी बेटी मौलातिना फातेमा अ.स. के ज़ुर्रियते तैय्यबा (पाकीज़ा नस्ल) में इमामत का सिलसिला जारी किया ये सिलसिला इमामत इक्कीसवें इमाम मौलाना तैय्यब अ.स. तक पहुँचा आपके वालिद

---

* ये भी रिवायत आई है कि यूसुफ नबी अ.स. के बाद आपके भाई लावा इमाम बने। ये मुस्तोदईन इमाम का सिलसिला था। और इस सिलसिले में बाप के बाद बेटा ही इमाम बने ऐसा ज़रूरी नहीं। (पेज-11)

माजिद मौलाना आमिर[अ.स.] ने आप पर नस की। नस के खतूत बिलादे इमानिया में पहुँचे। अगर आप नस न करे तो आप इमामे हक नहीं, आप इमामे हक नहीं तो आपके साबिक तमाम अइम्मा[अ.स.] बरहक नहीं और ये सिलसिला आदमे कुल्ली, आदमे अव्वल तक पहुँचे। मआज़ल्लाह के सबके सब बातिल ठहरे। सबब के इमामत को तो अकिब में चालू रहना ही चाहिए। इमामत की चाल सीधी है। कहकरी (उल्टी) नहीं। इब्तिदा से इन्तिहा तक बाप के बाद बेटे ही इमाम होते हैं चचा या चचा के बेटे या भाई वगैरह नहीं।

चौदहवें फातिमी इमाम मौलाना मोइज़[अ.स.] ने अपने दाई हलम बिन शैबान को लिखा कि इमाम इस्माईल[अ.स.] ने अपने बेटे इमाम मोहम्मद[अ.स.] को कायम किया जबकि आपने अपने वालिद इमाम सादिक[अ.स.] की ज़िन्दगी में इन्तकाल कर गये चूँकि इमामत उल्टी चाल (कहकरी) नहीं चलती ये तो आगे ही आगे बाप के बाद बेटे में ही चलती रहेगी। "वजअलहा कलिमतम बाकियतन फी अकिबिही"। मौलाना अब्दुल मुत्तलिब[अ.स.] के बेटे मौलाना अब्दुल्लाह[अ.स.] आपकी ज़िन्दगी में इन्तकाल कर गये तो आपके बाद आपके बेटे सरवरे कायनात मोहम्मद[स.अ.व.] ही कायम हुए। मौलाना आदम[अ.स.] के वारिस आपके बेटे हाबील[अ.स.] आपकी ज़िन्दगी में शहीद कर दिये गये तो आपके बाद हाबील[अ.स.] के बेटे शीस[अ.स.] ही कायम हुए। मौलाना इब्राहीम[अ.स.] के बेटे मौलाना ईस्माईल ज़बीहुल्लाह[अ.स.] आपके वालिद की ज़िन्दगी में वफात पा गये तो आपके बाद आपके बेटे मौलाना केज़ार[अ.स.] दादा की ज़िन्दगी में इमाम कायम हुए।

★मौलाना याकूब[अ.स.] इस्राईल के वारिस आपके बेटे मौलाना यूसुफ सिद्दीक[अ.स.] अपने वालिद की ज़िन्दगी में वफात हुए तो आपके बाद आप ही के बेटे नाहूर इमाम हुए।'

मौलाना हारून[अ.स.] मौलाना मूसा[अ.स.] की ज़िन्दगी में इन्तकाल कर गये तो आपके बाद आपके बेटे फिनहास ही इमाम हुए...

उन्नीसवें दाई सैयदना इदरीस इमादुद्दीन[क़ु.स.] ने अपनी किताब ज़ियाउल बसाइर में इस हकीकत को वाज़ेह किया है कि इमामत कहकरी चले नहीं ये तो वालिद की तरफ से वलदे तबई में ही जारी रहती है। जिस दिन से अल्लाह तआला ने ये कायनात खल्क किया उस दिन से अक्वार अद्वार

तमाम होंगे वहाँ तक चालु रहेगी। दूसरे दाई सैयदना इब्राहीम इब्ने हुसैन हामिदी अपनी किताब 'कनज़ुल वलद' में लिखते हैं कि हुज्जते अज़मा (इमामत के मालिक) अहले तौहीद की मआनी की मअनी है यानि तमाम मकासिद के मकसद है। नसब (ज़ाहिरी खानदानी शरफ) के खुलासा है और सबब (बातिनी रूहानी शरफ) की हकीकत है। मौलाना अहमद हमीदुद्दीन किरमानी[क.स.] लिखते हैं कि इमाम अकीम (बांझ या बिना औलाद) नहीं होते। उनकी नस्ल में बाकी रहने वाला बेटा होना ही चाहिए। जिस शख्स का अकिब न हो वो इमामत का मुस्तहिक नहीं हो सकता। नासूत (जिस्मुल इमाम) से लाहूत (नूरानी हेकल) का इतसाल होना ही चाहिए। ये इतसाल ही नसब और सबब के मआनी है। काफिर मुलहिद लोग दोनों को अलग–अलग मानते हैं। साबित ये हुआ कि इमामे हक के बगैर इक लम्हा भी हम नहीं रह सकते। हाज़िर इमाम की गैबत में जब वो हमसे गायब हो तो उनसे लाज़िम रहना व उनसे वाबस्ता रहना उनका मौअतकिद रहना उनका इकरार करना काफी है। जब तक उनके बाद के इमाम ज़हूर न करे साबिक इमाम का इकरार काफी है। सादिक इमाम[अ.स.] ने फरमाया के आखिर ज़मान में इमाम गायब होंगे। उम्मत गुमराह होगी। कुछ भी खबर नहीं मिलेगी कि इमाम कहाँ गये, मर गये या शहीद हो गये, कौनसी वादी में चले गये। ऐसे वक्त में दीन से वाबस्ता रहने वाले मुमिन की यह हालत होगी कि उसने अपने हाथ में कांटे पकड़े हुए हैं। इमाम[अ.स.] से अर्ज़ हुई कि फिर ऐसी हालत में नजात का तालिब मुमिन क्या करें? आपने फरमाया– "यलज़िमों बिल अव्वले हत्ता यसबुतस्सानी" अव्वल इमाम से वाबस्ता रहे यहाँ तक के दूसरे इमाम ज़ाहिर हो। बहम्दो लिल्लाह आज हम इस फरमान के मुताबिक इक्कीसवें इमाम मौलानल तैय्यब[अ.स.] से वाबस्ता हैं और शरअे मोहम्मदी से मुलतज़िम है। साबित हुआ कि इमाम और इमामत का मकाम कितना अअला है कि उनके बगैर इस कायनात का वजूद नामुमकिन है आम इन्सान की तखलीक में इमाम की तखलीक मुमताज़ है (शरीफ–लतीफ–मवाद की हैसियत से निराली है।) जिसका कयाम अल्लाह सुब्हानहु के अख्तियार से होता है तो उनकी तब्दील नामुमकिन है मुहाल है। मासूम इमाम अपने बेटे को इमामत से मखसूस मनसूस करता है। वो भी मासूम ही होता है। ऐसी हालत में ये कहना कितना गलत है कि इमाम सादिक[अ.स.] ने अपने बेटे इस्माईल[अ.स.] पर नस की मगर बाद में

उनसे ऐसा फेअल (काम) हो गया कि आपने नस तब्दील करली। ऐसा कहने वाले ने इमाम सादिक[अ.स.] पर लघु–लचर (बेबुनियाद) इल्ज़ाम लगाया कि जब आप मासूम इमाम हैं तो फिर ऐसे शख्स पर नस क्यों की, जिससे ऐसा फेअल सादिर हो कि जिसे तब्दील करना पड़े। अलअयाज़बिल्लाह!

इस्माईली तमाम किताबों में तो बिल्कुल वाज़ेह तौर पर लिखा गया है कि इमाम सादिक[अ.स.] ने इस्माईल[अ.स.] पर नसजली की। फिर इमाम इस्माईल[अ.स.] ने अपने बेटे मोहम्मद[अ.स.] पर नस की लेकिन गैर इस्माईली मुवर्रिखों ने भी इस अम्र जलील की तस्दीक की है। उसूले–काफी में इसके मुसन्निफ ने, इतिहाजुल हनफाअ में मकरेज़ी ने, शहरिस्तानी ने अपनी किताब में, उमदतुत तालिब में अबु अनूफ ने अल हरकातुल बातिनिया फिल इस्लाम में सैयद मुस्तफा गालिब ने, तारीख़ जहाँकुशाई में ख्वाजा अताउल्लाह ने, तारीखे फरिश्ता में मोहम्मद कासिम ने, तारिखुल अलवीन में मोहम्मद अमीन ने, बहारुल अनवार में अल्लामा मजलिसी ने, अखलाके मोहम्मद में सैयद सज्जाद हुसैन ने और अनवारुल कुरआन में शिया इमामिया फी इस्माईलिया में इस हकीकत को वाज़ेह किया है व इमाम ईस्माईल[अ.स.] पर नस होने का कतई सबूत पेश किया है। अफसोस्स कि फिर अल्लामा मजलिसी ने इमाम इस्माईल[अ.स.] पर लघु–लचर इल्ज़ाम लगाया कि आपने माअज़ल्लाह! शराब पी ली इसलिए इमाम सादिक[अ.स.] ने नस तब्दील करली। ये इल्ज़ाम दरहकीकत इमाम सादिक[अ.स.] पर है कि आपने मासूम होते हुए भी ऐसे शख्स पर नस क्यों की? उसूले–काफी जिल्द अव्वल सफा 329 पर और दूसरी कई इस्नाअशरी किताबों में लिखा है कि इमाम जअफरुस्सादिक[अ.स.] ने फरमाया कि इमाम हसन[अ.स.] व हुसैन[अ.स.] के बाद कोई वक्त भी इमामत दो भाईयों को नहीं मिली। इमाम हुसैन[अ.स.] के बाद ये सिलसिला इमामत इमाम अली बिन हुसैन[अ.स.] से चला। अल्लाह का कौल है कि– "व उलुल अरहाम बअजुहुम अउला बिबादिन फी किताबिल्लाह" अलाहाज़ा इमाम इस्माईल[अ.स] के बाद आपके बेटे मोहम्मद[अ.स.] उनके बाद उनके बेटे इमाम अब्दुल्लाह व इसी तरह बाप के बाद बेटे इमाम बनते गये। इमाम सादिक[अ.स.] का इमाम इस्माईल[अ.स.] पर वालिहाना अशफाक, मोहब्बत व उल्फत, बेटे की मोहब्बत के सबब नहीं बल्कि शाने इमामत के सबब था। जिस तरह आका रसूलुल्लाह[स.अ.व.] की मोहब्बत इमाम हसन[अ.स.] व इमाम हुसैन[अ.स.] के साथ थी। याकूब नबी की मोहब्बत यूसुफ नबी के साथ थी।

एक बुलन्द–पाया इस्ना अशरी आलिम मोहम्मद हुसैन मुज़्ज़फरी अपनी किताब अस्सादिक जिल्द दूसरी के पेज 122 पर लिखते हैं कि इस्माईल[अ.स.] सादिक[अ.स.] के सबसे बड़े साहबज़ादे थे, आप उन्हें बहुत चाहते थे और उन पर इशफाक रखते थे। इस्माईल[अ.स.] की मौत पर इमाम सादिक[अ.स.] ने निहायत हैरतअंगेज़ और तआजुबखेज़ बातों का इज़हार किया चुनांचा जब वे वफात पा चुके और उन्हें चादर से ढांक लिया तो आपने उनका चेहरा खोलने का हुक्म फरमाया और उनकी पेशानी और मुँह और सीने को बोसा दिया फिर दूसरी बार चेहरा खोलकर वैसा ही किया, जब उन्हें बाद गुस्ल कफन में लपेटा गया तो फिर उनका चेहरा खोलने का हुक्म दिया, चेहरा खोला गया और पहले की तरह आपने अमल किया। दूसरी जगह लिखा है कि जब मौत करीब हुआ तो आप बहुत रंजीदा हुए और एक तवील सजदा किया फिर सजदे से सिर उठाया और इस्माईल[अ.स.] की आंखे बंद की, दोनों जबड़ों को बंद किया और उन पर एक लिहाफ डाल दिया फिर वहां से उठे यहां तक कि आप के चेहरे पर रंज और मलाल के आसार नुमाया थे और जब गुस्ल दिया जा चुका तो आपने कफन तलब किया और उसके हाशिये पर लिखा– इस्माईल शहादत देते हैं– ला इलाहा इल्ललाह' मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह! और फरमाया कि ऐ लोगों ये दुनिया फिराक और मुसीबत का घर है। फिराक तो ऐसी जलन है कि कभी सर्द न हो अलबत्ता लोग सब्र करने में एक–दूसरे से सबकत ले जाते हैं। अगर आज किसी का भाई न मरा हो तो वो खुद मरेगा, आगे ये गया तो वो खुद जायेगा। इमाम सादिक[अ.स.] इस्माईल[अ.स.] को जन्नतुल बकीअ ले गये। जनाज़े को बार–बार खोलकर बताया कि देखो ये मेरे बेटे इस्माईल ही है न! और फिर कब्र में उतर कर बैठे व अपने घर में दफन किया जो जन्नतुल–बकीअ के करीब है। (आज सऊदी नजदी ने कब्र के आसार मिटा दिये। अफसोस!)

जब आपने इमाम इस्माईल[अ.स.] पर नस की, अबु दवानीक को ये खबर मिली वो परेशान हुआ और आपको कहलाया कि इस्माईल[अ.स.] को मेरे साथ रखो मैं उनकी हर तरह से सम्भाल रखूँगा। आप उसके मकरो–फरेब से आगाह थे लिहाज़ा खुशउसलूबी से इसका रद्दे–जमील किया और इस्माईल[अ.स.] को लेकर ईराक फिर हजाज़ की तरफ चले गये, बाद में एक

*फातिमी दौलत को पूरी तरह से कायम करने वाले बारहवें इमाम मेहदी थे और आपका नाम मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह कायम मेहदी था। सलामुल्लाह अलैहि! (पेज-15)

साल चार महीने अपने घर में छुपाये रखा यहाँ तक की आप (इस्माईल) वफात हुए और आपने जनाज़े को ले जाते हुए वो हकीमाना अमल किया जिसका पहले ज़िक्र हो चुका। सलामुल्लाह अलैहा व अला आलिहा व सलवात।

मोइज़[अ.स.] इमाम को सवाल हुआ कि आप के जानशीन कौन है? (ये सवाल नस के पहले था।) आपने जवाब दिया आज तुम ये सवाल करते हो हालांकि तुम जानते हो की मेरे बेटे में से एक बेटा मेरा जानशीन है, इमामत अकिब में ही चलती है, ये इमामत इमाम हसन[अ.स.] व इमाम हुसैन[अ.स.] के बाद कभी किसी दो भाईयों में नहीं होगी। अभी अल्लाह ने मुझे आगाह नहीं किया है ऐसी हालत में तुम ये सवाल करते हो तो बताओ मैं तुम्हें क्या बताऊँ? लिहाज़ा तुमको खामोश रहना चाहिए यहाँ तक खुद अल्लाह सुब्हानहु इन्तखाब करे और मेरे जानशीन खैरो–बरकत से अख्तियार करे। इसी तरह लोग इमाम जअफरूस्सादिक[अ.स.] को वक्त से पहले सवाल न करते तो शुब्हा में वाकेअ (मुबतिला) न होते। इमाम सादिक[अ.स.] के बाद इमाम इस्माईल[अ.स.] उसके बाद आपके बड़े बेटे मोहम्मद[अ.स.] इमाम हुए। इमाम सादिक[अ.स.] की वफात के बाद आपकी औलाद में बीसीयों फिरके हो गये। इफ्तिहया, समतिया, मौसूविया कतिया (मूसा काज़िम की इत्तबाअ करने वाले), ममतूविया, वाकिफा वगैरह वगैरह। मौलान काज़ी उल नौमान[क़ु.स.] के मुताबिक चौदह फिरके अल हरीरा, अल रावन्दिया, अलहसीनिया, अलज़ैदिया, अलजारूदिया, अलबतरिया, अलमुगीरिया, अलकियानिया, अलकरबिया, अलमुख्तारिया, अलहारिसिया, अलबयानिया, अलअब्बासिया और अलरज़ामिया। इन फिरकों के गलत मकालात, अइम्माये नामनिहाद, निशानात, जमाअत की ज़िक्र मय तरदीद किताबुल अरजुज़तुल मुख्तार फी इस्बाते हक्कुल इतरतुल मुख्तार की तफसील मौजूद है। हसन अस्करी की इत्तबाअ करने वाले ग्यारह फिरके हुए। ये सब मुद्दईयाने–बातिल या तो कत्ल हुए या कैद हुए या तरह तरह से मुबतिलाए मोअज़्ज़ब हुए। ऐसी बदतर हालत में हुसैनी फातिमी, इस्माईली अइम्माए हक[अ.स.] और उनके दुआत[र.अ.] सतर (पर्दे) में तकियत में रहकर खुफिया तहरीक से दीने–हक की तबलीग करते रहे यहाँ तक कि मौलाना अब्दुल्लाह मैहदी[अ.स.] ने ज़हूर किया और फातिमी दौलते हक्का कायम हुई। मुसविया कतिया फिरका जो इमामियत इस्नाअशरिया से मशहूर है। जनाब मूसा काज़िम के पहले

सादिक[अ.स.], मोहम्मद[अ.स.], अली[अ.स.], हुसैन[अ.स.], हसन[अ.स.] और अली[अ.स.] को और उनके (सादिक[अ.स.]) बाद अली, मोहम्मद, जवाद, हसन अस्करी और मोहम्मद को अइम्मा मानते हैं। कहते हैं कि बारहवें इमाम मोहम्मद लगभग 1200 साल पहले सामर्रा की गार में रूपोश (गायब) हुए जो बाद में ज़हूर करेंगे वो ज़िन्दा है वो ही आएँगे? इनको ही ये लोग मैहदी कहते हैं, नाम इनका मोहम्मद बिन हसन अस्करी है। हालांकि इस्माईली और गैर इस्माईली किताबों में ये हदीस मनकूल है कि "लोलम यब्क़ मिनद्दुनिया इल्ला योमे वाहिदुन लतवलल्लाहो ज़ालिकलयोमं हत्ता यबअसल्लाहो मिन अहलिबयती रजुलन युवातिस्मुह इस्मी वस्मो अबीहि इस्मं अबी यमलाउल अर्दं अद्लन वकिस्तन कमामुलिअत जुलमन व जौरा" तर्जुमा– अगर दुनिया का एक दिन भी बाकी रह जायेगी तो भी अल्लाह उसे लम्बा कर देगा ताकि मेरे अहलेबैत में से एक शख्स मबऊस होगा जिसका नाम मेरा नाम और उसके वालिद का नाम मेरे वालिद का नाम होगा, वो ज़मीन को अद्ल इन्साफ से उसी तरह भर देगा जिस तरह जुल्म व जोर से भरी हुई है। इस हदीस से साबित हुआ कि मेहदी' का नाम मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह है न कि मोहम्मद बिन हसन! बरखिलाफ इसके इस्माईली किताबें ये बताती है कि दौरे मोहम्मदी के आखिरी इमाम (सौवें इमाम) कायमे मुन्तज़र मजमअल अव्वलीन व आखरीन का नाम मोहम्मद और उनके बाप का नाम अब्दुल्लाह होगा। सलामुल्लाह अले व अलैहि!

मोहम्मद रसूलुल्लाह[स.अ.व.] ने असमाउल्लाह अल हुस्ना (अल्लाह सुब्हानहु के नाम) की तस्बीह सौ दाने की दी है, बारह दाने की नहीं। इस्नाअशरी शिया इमामिया बारह खुलफाओं वाली हदीसें–रिवायतें बयान करते हैं लेकिन इस्माईली किसी किताब में ये नहीं, ये लोग बनी ईस्राईल के बारह नकबा की मिसाल लेकर बारह इमामों की बात करते हैं। क्या आदम[अ.स.] से लेकर ईसा[अ.स.] तक बारह नकबा हुए हैं? फिर मोहम्मदुल मुस्तफा[स.अ.व.] के दौर में बारह नकबा (इमाम) किस तरह? हकीकत ये है कि बनुईस्राईल के बारह नकबा एक ही वक्त में बतौर बारह दुआत मुकर्रर किए गये थे। इसी तरह हर नबी हर इमाम के तहत हर ज़माने में बारह दुआते जज़ाइर होते हैं। मान लो कि बारह खुलफा वाली हदीसों को मान भी लिया जाए तो इनसे मकसूद बारह दुआत हो सकते हैं जो हर ज़माने में इमाम के तहत मुख्तलिफ मुकामात के लिए मुकर्रर किये जाते हैं। रसूले मुस्तफा[स.अ.व.] के बारह नकबा हैं– अली[अ.स.], जअफरूत्तय्यार[र.अ.], हमज़ा[र.अ.], उबेदा[र.अ.],

सलमान फारसी[र.अ.], अबुज़र[र.अ.], मकदाद[र.अ.], अम्मार[र.अ.], अब्दुल्लाह बि मसऊद[र.अ.] वगैरह। अमीरुल मोमिनीन अली[अ.स.] के नकबा (हुज्जत) अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास, मोहम्मद इब्ने अबीबक्र, हजर बिन अदी, आमिर बिन वाइल, मलक बिन हारिस, अमरु बिन हमक खज़ाई, अदी बिन हातिम, सअसाअ बिन सहान वगैरह। इमाम हसन[अ.स.] के नकबा अस्बग बिन नबाता, जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी, कुमेल बिन ज़ियाद वगैरह। इमाम हुसैन[अ.स.] के नकबा मुस्लिम बिन अकील, मोहम्मद बिन अबी ज़ैनब, जाबिर अल कन्दी, हानी बिन उरवाह वगैरह।

इस्ना अशरी इमामिया सिर्फ बारह पर मुनहसिर क्यों? बारह की गिनती पूरी करने के लिए सैयदुल वसीयीन मौलाना अली[अ.स.] को भी इनमें शामिल करके अली[अ.स.] को इमामे अव्वल बताने लगे। और ऐसा करके आपको वसायत के अअला मकाम से हटा कर अइम्मा के सिलसिले में मानने लगे। (इस किताब के इब्तिदाई पेज पर तफ्सील देखिये।) मुवर्रिखीन बारह खुलफा वाली जअली हदीस को मुखतलिफ तौर से बयान करते हैं, शिया इमामिया बारह इमाम बताते हैं और जाहिज़ बिन हजर (अबु दाउद) तो 1 अबु बक्र, 2 उमर, 3 उस्मान, 4 अली[अ.स.], 5 मुआविया, 6, यज़ीद, 7 अब्दुल मलक, 8 वलीद, 9 उमरु बिन अब्दुल अज़ीज़, 10 यज़ीद सानी, 11 हुश्शाम, 12 सूलेमान को बारह खुलफा गिनाते हैं। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजेऊन! ये बारह खुलफाओं वाली हदीस का मनगढ़त होना कोई ताज्जुबखेज़ बात नहीं क्योंकि ऐसी सैंकड़ों हदीसे गढ़ दी गई है। ईस्माईली किताबें ऐसी हदीसों से मुनज़्ज़ा व बरी है। शिया बारहवें इमाम मोहम्मद बिन हसन अस्करी का बारह सौ साल से ज़्यादा ज़िन्दा रहने की बात भी ना काबिले कबूल है। हर इन्सान के लिए मौत हक है। इसमें कोई शक नहीं कि मुमिनीन और इमामों के लिए मौत हिकमत भी है और रहमत भी। इसीलिए मौत का नाम कुरआन में यकीन भी है, हर ज़मान के इमाम अपने साथ हज़ारों मुमिनीन की अरवाह को लेकर मौत के ज़रिये से आलमे अकदसे जन्नत में पहुँचते हैं, यही हकीकत है। "व इज़ालम यकुन इमामुन फमिन एना' युनालुल खलासो वल इरतिकाअ" अगर इमाम न हो और इमाम वफात न पाए तो तमाम अहले ईमान की इस दुनिया से खुलासी और तरक्की कैसे मुमकिन हो? लिहाज़ा तमाम अम्बिया[अ.स.] व औलिया[अ.स.] ने वफात के ज़रिये तमाम अपने अहले दअवत को जन्नत में पहुँचाया और पहुँच रहे हैं।

खिज़्र[अ.स.], इलियास[अ.स.], इदरीस[अ.स.], ईसा[अ.स.] औलियाउल्लाह और इबलीस, याजूज माजूज वगैरह अअदाउल्लाह (दुश्मनाने अल्लाह) का ज़िन्दा रहने की बात भी गलत है। हाँ, ये सब ज़िन्दा है अपनी दअवत (मिशन) और अपने खुलफा (नुमाईंदो) के ज़रिये से, जिस्म से नहीं।

शिया इमामिया के बारहवे इमाम के मुत्तलिक ये बात आई है कि सामर्रा की गुफा में गायब हो गये। आप बहुत कमसिन थे। गायब हुए उस वक्त आपकी वालिदा आपको देखती रह गई। चुनांचे कहा जाता है "गाब' वलम युअरफ लहु खबरुन" वो गायब हो गये फिर उनकी कोई खबर नहीं मिली। अब उनके ज़िन्दा रहने की खबर कहाँ से आई? उनके गैबत की ये शाकिलत शरई हुक्म के मुताबिक लापता शख्स का हुक्म है। गालिबन इस शाकिलत में उनकी मौत का हुकम होगा। तस्लीम कर लिया जाए कि उनकी मौत की खबर यकीनी तौर पर नहीं मिली तो भी मशकूक होने से खाली नहीं।

इमाम इस्माईल[अ.स.] ही की नस्ल में इमामत जारी होने का सबूत मोहम्मदुर्रसूललुल्लाह[स.अ.व.] और अइम्मा[अ.स.] के तबरुक्कात का उनके पास होना है। किताब बहारुल अनवार वगैरह शियाई किताबों में इसका काफी बयान मौजूद है। ये तबरुक्कात बनी ईस्राईल के ताबूत के मानिंद है। ये ताबूत जिसके दरवाज़े पर होता उनको नबुवत दी जाती, बस तो ये तबरुक्कात जहाँ हो उनको इमामत मिले। (उसूले काफी)। जनाब रज़ा से भी इसी किस्म की रिवायत आई है। मोवर्रिख तगरी बरदी ने लिखा है कि सन् 407 हिजरी में सौलहवें फातिमी इमाम हाकिम बिल्लाह[अ.स.] ने एक शख्स को मदीना मुनव्वरा भेजा ताकि वो इमाम जअफरुस्सादिक[अ.स.] का मकान खोले और मुस्सहिफ व दीगर तबरुक्कात ले आये। ये शख्स दाई खतकीन (या दाई हमीदुद्दीन) थे। दाई मौसूफ गये और बताई हुई निशानी के मुताबिक तमाम चीज़े यानि तबरुक्कात वहाँ से निकाल लाये। तग़री बरदी जिल्द4 सफह 224। इब्ने असीर 9ध्81 ने भी यही बात लिखी है। अल फातिमीयून मिस्र सफह 223 में भी लिखा है कि एक नुस्खा कुरआने करीम का, एक चारपाई, एक हसीर और कुछ असारुल बैत (मकान का सामान) दाई खतकीन निकाल कर ले आये। तारीखुल इस्लाम सफह 123 में लिखा है कि उलूमे अइम्मा और असलहा (हथियार) दाई हमीदुद्दीन निकाल कर ले आये। तारीखे शिया का एक वर्क सफह 226 में भी यही बात लिखी है।

फातिमी मुवर्रिख दाई इदरीस[र.अ.] ने भी यही बात लिखी है। शरीफ हमीरी हुसैनी ने भी किताब कनजुल अखबार में इसका ज़िक्र किया है। ये तबरुक्कात जनाब मूसा काज़िम से लेकर हसन असकरी तक किसी के पास नहीं पहुँचे। ये तबरुक्कात तो ईस्माईल[अ.स.] के हिस्सा में आये और जहाँ इमामत थी वहाँ पहुँच गये। रसूलुल्लाह[स.अ.व.] के तमाम तबरुक्कात मय हथियार जो इमाम सादिक[अ.स.] के घर में मदफून थे वो इमाम हाकिम[अ.स.] के पास पहुँच गये लिहाज़ा मज़कूराबाला रिवायतों के मुताबिक ईस्माईल[अ.स.] इमामे बरहक साबित हुये। जनाब मूसा काज़िम बगदाद के कैदखाने में वफात पा गये उस वक्त जनाब रज़ा मदीना में थे। नस कैसे वाकेअ हुई इसका कोई पता नहीं। यही किस्सा जनाब अली नकी और मोहम्मद तकी का है।

जनाब मूसा काज़िम की कब्र खोदी गई इसका ज़िक्र दाई मोइय्यद शीराज़ी ने एक कसीदे में पुरदर्द लहजे में किया है। वो इसलिये नहीं कि काज़िम साहब को वो इमामे बरहक समझते थे बल्कि इसलिए कि वो इमाम सादिक[अ.स.] के साहबज़ादे थे। चुनांचे दूसरे कसीदे में दाई मोइय्यद[र.अ.] ने लिखा है– "लकद राना' कफरुन अला कल्बिमन इलल असकरी लहूत् तरफो रानी सदिन वहवा' तारिको अज़बिन फुरातिन वतालिबुहु हैसो लफिल कियानि" दीवाने अल मोइय्यद तर्जुमा– यकीनन कुफ्र ने उस शख्स के दिल पर ज़ंग लगा दिया है जिसकी आँख असकरी की तरफ लगी हुई है, ये प्यासा है और ठंडे मीठे पानी को छोड़ कर ऐसी जगह को तलब कर रहा है जहाँ उसका कोई वजूद ही नहीं (मतलब ये कि इमामे हक को छोड़कर ऐसे शख्स को इमाम समझ रहा है जिसका कोई वजूद ही नहीं।) इसके साथ दाई मोय्यद[कुद्] ने अपनी मजालिस और सीरत में इमामिया के उलुमाओं से जो मुनाज़िरा किया और उनको बातिल ठहराया वो बिल्कुल साफ है।

शिया इमामिया के फिकहा में निकाहुल मुताअ ज़ाइज़ है बल्कि मुस्तहब है हालांकि कुरआन और हदीस की रोशनी में ये मसनूई निकाह (नाम निहाद) हराम है, बिल्कुल हराम है, एक तरह का खालिस ज़िना है। किताब दआईमुल इस्लाम की दूसरी जिल्द में रसूलल्लाह[स.अ.व.] की ये रिवायत आई है कि आपने निकाहुल मुताअ को हराम किया है। और मौलाना अली[अ.स.] ने फरमाया कि सही निकाह दो शाहिद और वली के बगैर नहीं हो सकता, एक दिरहम या दो दिरहम, एक दिन या दो दिन से नहीं ये तो सिफाह है, ज़िना है, निकाह में कोई शर्त जायज़ नहीं। इमाम

सादिक[अ.स.] को किसी ने निकाहुल मुताअ का सवाल किया, आपने कहा तू ही बता ये क्या है? सवाल करने वाले ने कहा– कि कोई मर्द किसी औरत को कहे कि मैं एक दिरहम या दो दिरहम पर या एक बार हम बिस्तरी या एक या दो दिन के लिए मैं तेरे साथ शादी करना चाहता हूँ, ऐसे करार को मुताअ कहा जाता है। आपने (सादिक[अ.स] ने) कहा– ये तो ज़िना है, फाजिरों का फअल है, अल्लाह की किताब में इसका बुतलान मौजूद है कि– "वल्लज़ीना हुम लिफुरुजिहिम हाफिजून... आदून0 [सूरए मौमिनून] तर्जुमा– मुमिन वो है जो अपने शर्मगाहों की हिफाज़त करते हैं, सिवाए अपनी मनकूहा बीवियों या शरई कानून के मुताबिक हासिल की हुई पाक बान्दियों के, क्योंकि उस पर उनसे कोई मुवाखज़ा नहीं अलबत्ता इसके अलावा कोई और रास्ता तलाश करेगा तो वो सब ज़्यादती करने वाले, तअद्दी करने वाले मुजरिम होंगे। अल्लाह ने तलाक का ज़िक्र किया है जिससे ज़ौज़ेन (मियां बीवी) के दरम्यान जुदाई होती है। ज़ौज़ेन को आपस में वारिस भी किया है, तलाकशुदा औरत पर इद्दत भी वाजिब है और निकाहुल मुताअ बिल्कुल इसके खिलाफ है। ये मुताअ तो इसको मुबाह करने वालों के नज़दीक ये है कि मर्द और औरत मुकर्रर मुद्दत के लिए साथ–साथ रहने पर इत्तफाक करे, मुद्दत के बाद बिना तलाक औरत अलग हो जाए, इस पर इद्दत भी नहीं, अगर बच्चा हो तो मुताअ करने वाले का नहीं, उस पर पालन–पोषण का खर्च भी नहीं, आपस में विरासत भी नहीं ये तो वही खालिस ज़िना है जिसको सब जानते हैं...।

किताब मुखतसरुल आसार में भी इसी तरह की तवील ज़िक्र है फिर लिखा है कि ये लोग (शिया इमामिया) ये भी कहते हैं कि कुँवारी लड़की से मुताअ करना जायज़ नहीं, हाँ शौहर वाली औरत से जायज़ है। मुताअ की तहरीम में रसूलल्लाह[स.अ.व.] से बीसीयों हदीसे आई है। आप का कौल है कि "वली और दो शाहिद के बगैर निकाह नहीं हो सकता।" और मुताअ वाले वली और शाहिद के बिना ही जायज़ मानते हैं। मुताअ के साथ लफ्ज़ निकाह गालिब कर दिया गया हालांकि ये निकाह नहीं ज़िना है। रसूलुल्लाह[स.अ.व.], अली[अ.स.] और इमाम सादिक[अ.स.] से निकाहे मुताअ की तहरीम की ये रिवायत है। याद रहे कि सही निकाह के लिए चौदह शर्ते हैं, सात निकाह के पहले और सात निकाह के बाद। 1. वली की वलायत 2. औरत की रज़ामन्दी 3. मर्द की रज़ामन्दी 4. काज़ी का खुत्बा 5. दो शाहिद

वकालत के 6. दो शाहिद निकाह के और 7. शर्त मेहर अब निकाह के बाद की सात शर्ते– 1. तलाक 2. आपस में विरासत 3. तलाकशुदा और पर इद्दत 4. वफात की इद्दत 5. तलाकशुदा औरत का नान–नफ्का (पालन–पोषण खर्च) इद्दत की मुद्दत तक 6. बच्चे का ज़ौज़ेन से लाहिक (बच्चे का अपने माँ–बाप की तरफ वाबस्ता होना) होना 7. बांदी के फर्ज (शर्मगाह) का मुबाह होना। इन शर्तो के खिलाफ जो होगा वो बातिल है और मुताअ में ये शर्ते नहीं लिहाज़ा वो बातिल है। अब ये कहा जाए कि अल्लाह का कौल "फमस्तमतअतुम बिही मिन हुन्न फआतुहुन्ना उजूरुहुन्न फरीज़तन" सूरए निसा की आ. 24 में से तर्जुमा– फिर तुम इन औरतों से इस्तिमताअ करो (फायदा लो) तो उनकी उजरत अदा करो जो मफरूज़ा है। देखिये अल्लाह ने उजरत देने के बाद फायदा लेने का कहा। शिया इमामिया जवाब– मुताअ को जायज़ मानने वालों ने इस आयत का कुछ हिस्से का ज़िक्र किया इस हिस्से के पहले और बाद के हिस्से का ज़िक्र नहीं किया। इस तरह इसको ये लोग सही समझे ही नहीं। आयत में इस जुमले से पहले ये कहा गया है– "मोहसिनीन गैर मुसाफिहीन" यानि हराम की गई औरतों के बाद तुम अपने माल से इनके सिवा और औरतों से शादी करलो। यानि इस निकाह से जो वली और शाहिदेन से होता है। ऐसी हालत में कि तुम सिफाह (ज़िना व मौज मस्ती) न करो। अब इस सही निकाह के बाद तुम अपनी मनकुहा से इस्तिमताअ करो यानि मअशिरत, छूना, बोसा देना, जमाअ करना, गले लगाना व इसी किस्म के फायदे हासिल करो तो उनकी मफरूज़ा मेहर की रकम है वो अदा कर लो, ज़िफाफ के पहले। बस तो आयतुल इस्तिमताअ की सही माअनी है– मज़कूरा लज़्ज़त हासिल करना सही निकाह के बाद। वह मतलब हरगिज़ नहीं है जो ऐसे लोग करते हैं जिन्होंने मुताअ को मुबाह कर दिया और गलत ख्वाहिश के ताबेअ हुए तो अल्लाह ने उनको गुमराह किया। इन्नलहुदा हुदल्लाहो।

मुताअ के बारे में उन्होंने (शिया इमामियों ने) जितनी भी रिवायतें लिखी है वो सबकी सब झूठ बनावट है। नबी करीम स.अ.व. और अइम्मा अ.स. पर झूठ बनावट की गई गुमराह लोगों की गुमराहकुन खुराफात है। हराम और सिफाह का नाम निकाह रख दिया ऐसे कि एक मर्द एक तबीब के पास गया और कहा कि मेरी दवा कर। तबीब ने कहा कि तेरी दवा ऐसी है जो तेरे दीन में हराम है, मरीज़ ने कहा कि तू चाहे उस चीज़ से मेरी दवा कर उसका नाम बदल कर वो नाम रख जो मेरे दीन में हलाल है।

सही निकाह में तलाक की शर्त और बच्चा हो तो बाप की तरफ मन्सूब करने की शर्त बहुत ही अहम है। मुताअ के बातिल होने का सबूत इस एक सच्चे किस्से से साबित होता है कि एक शिया मर्द ईरान से बसरा पहुँचा। वहाँ एक औरत से मुताअ किया और फिर अपने वतन चला गया। औरत हामिला हो गई और बच्ची पैदा हुई। अब पच्चीस साल बाद वो शिया मर्द फिर बसरा गया और एक पच्चीस साला लड़की से मुताअ किया। दौराने बातचीत से साबित हुआ कि वो लड़की उसी शिया शख्स की बेटी है। वह समझ गया कि मैने अपनी बेटी से ज़िना किया है। वो बहुत ही पशेमान हुआ और खुद पर व मुताअ को जायज़ करार देने वालों पर लानत की और तौबा की। अफसोस है इसना–अशरी लोग की तरह कुछ हशवी–सुन्नी लोग ने भी मुताअ को हलाल कर लिया है। ये हवा परस्ती है, हुदा नहीं। माहनामा दारुस्सलाम मालेर कोटला अगस्त 1995 में सफाह 21 पर "मसनूई शादी– मुताअ" के उनवान के तहत मुताअ की तहरीम के मुत्तलिक सबूत में सही मुस्लिम व अबुदाउद की रिवायते लिखीं है। ये भी लिखा है कि अली[अ.स.] ने कहा कि खैबर के दिन रसूलुल्लाह[स.अ.व.] ने फरमाया– औरतो का मुताअ और शहरी गधों का गोश्त हराम है। यही वजह है कि सहाबाकिराम मिस्ले अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास[र.अ.] और चार अइम्मा अहले सुन्नत व जमात व इमाम जअफरुस्सादिक[अ.स.], शूरा व कुर्तबी व इब्ने हज़्म व शोकानी का मुत्तफक फतवा है कि मुताअ ताकयामत हराम है। शरीयत अल्लाह और अल्लाह के रसूल के फैसलों का नाम है। किसी मनगढ़त मौलवियों और नामनिहाद मुफतियों का फतवा व उनकी हिकमतों के बयान का नाम नहीं। ऐसी उल्टी सीधी मस्लिहते, शराब और दूसरी हराम चीज़ों के लिए भी निकाली जा सकती है। ये अच्छी तरह याद रखे कि ज़िना को रोकने के नाम पर किसी और तरह का ज़िना का दूसरा रास्ता दिखाया जाए, उसकी तरगीब भी दी जाए व मनगढ़त फज़ीलत भी बयान की जाए तो वो जायज़ नहीं हो जाता। निकाह इस्लाम की नज़र में मुकद्दस मज़बूत व मुस्तहकम अहदो पैमान है। बस का सफर नहीं है की टिकट लिया सवारी की और उतर कर चल पड़े।

---

*ये सब नाम उलुमाओं की खानगी किताबों में है इसलिए आम अवाम व मौमिनीन को ज़हूर होने वाले इमाम ही हकीकत बताएंगे। (पेज-२५)

सूरए निसा में साफ–साफ हुक्मे इलाही है कि इस्लाम में चार औरतों तक से निकाह जायज़ है। तमाम अहले इस्लाम इस पर मुत्तफिक है। इसके खिलाफ नामनिहाद लीडर असगर अली इंजीनियर का ये लिखना और कहना कि एक से ज़्यादा शादियों की इजाज़त सिर्फ यतीम लड़कियों के सिलसिले में दी गई है और ये तो उस ज़माने की बात है। आज इस पर अमल नहीं होना चाहिये। इस मसअले में तरमीम (रद्दोबदल) की ज़रूरत है। अब शरअे मोहम्मदी के एहकाम पुराने–फरसूदा हो गये हैं, इस ज़माने के काबिल नहीं। इस शख्स का उसकी किताब "कुरआन में औरतों का दर्जा" में ये फतवा भी है कि निकाह में वली की ज़रूरत नहीं। उदयपुर के डॉ. अलवी भी ऐसी ही गलत बातें करते हैं। इसी तरह मुहम्मद तेजानी ने अपनी किताब "अहले ज़िक्र" के सफह 528 पर लिखते हैं– शिया इस्नाअशरी मस्लक औरत को ये हक देता है कि वो अपनी मनपसंद से शादी करे, वली और सरपरस्त इस पर तहमील नहीं क़र सकता।

बहम्दोलिल्लाह! इस्माईली तैय्यबी दाऊदी बोहरा का मस्लक रसूलुल्लाह[स.अ.व.] और आपके अहलेबैत अइम्मा हक[अ.स.] का मस्लक है कि वली और दो शाहिदों के बगैर कोई निकाह–अक्द नहीं हो सकता, ऐसा निकाह बातिल है जिस तरह मुहम्मद व आले मुहम्मद अलेहिस्सलाम की वलायत के बगैर, वली बगैर तमाम शरई अअमाल गैर मकबूल है। दोनों जगह वलायत रूह के मकाम में है।

कलिमतुल इमामत

बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम

अल्लाहसुब्हानहु अपनी किताब में फरमाता है– "वलिल्लाहिल अस्माउल हुस्ना वदऊहो बिहा" तर्जुमा– और अल्लाह के लिए है बहतरीन नाम और उन्हीं नाम से उन्हें पुकारो यानि दुआ करो। या अल्लाहो, या रब्बो, या रहमानों, या रहीमो, या मालिको, या मुहीतो, या कदीरो, या अलीमो, या हकीमो, या तव्वाबो, या बसीरो, या वासिओ, या बदीओ, या समीओ, या काफी, या आलिमो, या रऊफो, या शाकिरो, या इलाहो, या वाहिदो, या गफूरो, या हलीमो, या काबिज़ो, या बासितो, या हय्यो, या कय्युमो, या अलीयो, या अज़ीमो, या वलीयो, या ग़नीयो, या हमीदो, या काइमो, या वह्हाबो, या सरीउल हिसाबो, या खबीरो, या रकीबो, या हसीबो, या शहीदो,

या अफुव्वो, या मुकीतो, या वकीलो, या फातिरो, या काहिरो, या कादिरो, या लतीफो, या हाकिमो, या मुहयी, या मुमीतो, या नेअमल मौला, या नेअमन नसीरो, या हफीज़ो, या करीबो, या मुजीबो, या कवीयो, या मजीदो, या वदूदो, या फअआलो, या कबीरो, या मुतआलो, या मन्नानो, या खल्लाको, या वारिसो, या सादिको, या बाइसो, या करीमो, या हक्को, या मुबीनो, या नूरो, या हादीयो, या फत्ताहो, या गाफिरो, या काबिलो, या शदीदो, या ज़त्तोले, या रज़्ज़ाको, या ज़लकुव्वतै, या मतीनो, या बर्रो, या मुकतदिरो, या बाकि, या जलजलालि, या ज़लकिरामे, या अव्वलो, या आखिरो, या ज़ाहिरो, या बातिनो, या कुद्दूसो, या सलामो, या मुमिनो, या मुहेमिनो, या अज़ीज़ो, या जब्बारो, या मुतकबिरो, या खालिको, या बारियो, या मुसव्विरो, या मुबदिओ, या मुईदो, या अहदो, या समदो इन्न लिल्लाहि तिसअतन व तिसईन इस्मन मन अहसाहा दखलल जन्नत । (यकीनन अल्लाह के 99 निन्यान्वे नाम है, जो शख्स इसका इहसा (शुमार) करेगा वो जन्नती है। ला इलाहा इल्लाहुव अल्लाहो सुब्हानहु वहदहु ला शरीकालहु के अस्माए हुस्ना ये है जो कुरआन मजीद से लिये गये हैं। इन अस्माउल्लाहिल हुस्ना के ममसूल, मुकाबिल रूहानी आलम के दस उकूल है। 1. अक्ले अव्वल 2. अक्ले सानी, सबअते उकूल यानि सात उकूल और फिर दसवां अक्ले आशिरे मुदब्बिर आलमुल तबीअत। जिस्मानी आलम के नौ अफ्लाक और दसवां आलमुल तबीअत। दस के मुकाबिल दस। इसी तरह नफ्सानी आलम के दस हुदूद नातिक (नबी), वसी (सामित), इमाम और मौमिन मुस्तजीब तक कुल दस हुदूद मिस्लन ब मिस्ल। इस जिस्मानी आलम की पैदाइश के बाद अल्लाह सुब्हानहु खलीफाए अव्वल आदम अव्वल आदम कुल्ली कायम हुए। आपके बाद दौरुल कशफ के 50000 साल फिर दोरुल फतरत के 3000 साल में मुस्तकरीन इमामों का सिलसिला बाप के बाद बेटे में इस्तिकरारी इमामत का सिलसिला जारी–सारी रहा फिर दोरुल सतर शुरूअ हुआ 7000 साल का और उस दौर में मुस्तकर इमामों के साथ–साथ मुस्तौदअ इमामों का सिलसिला शुरू हुआ। अम्बिया किराम[अ.स.] का कयाम ज़ाहिरी शरीअत का निज़ाम चालु हुआ। दोरुल कशफुल फितरत के आखिरी इमाम मौलाना बहलाह थे। आपके तीन बेटे 1. मुस्तकर इमाम 2. हुज्जत हुनैद 3. तैखूम (यानि आदमसफीउल्लाह दोरुल सतर के नबीये अव्वल अबुल बशर[अ.स.])। मौलाना बहलाह ने अपने बेटे हुनैद के ज़रिये आपको कायम किया। मुस्तकर इमामों का सिलसिला

मख्की तौर से चला। मौलाना हूद तक फिर मौलाना तारुख तक मौलाना तारुख के बेटे मुस्तकर इमाम नबी खलीलुल्लाह इब्राहीम[अ.स.] थे। इधर मौलाना साहिबे नबुवत आदम सफीउल्लाह के बाद मुस्तोदअ वारिस हाबील, शीस, अनूश, केनान, महलाईल, अखनूख, मतूशल्ख, लामिख और नूह नजीयुल्लाह साहिबे नबुवत साम अरफख्शद, शालिख, आबिर, फालिख, अरअवी, शाऊर, तारुख, इब्राहीम[अ.स.] साहिबे नबुवत। इस्माईल, केज़ार, हम्ल, नब्त, सलामान, जमह, ऊद, उद (साहिबे नबुवत मूसा के मुकीम), अदनान, मअद, निज़ार, मिज़्र, इलियास, मदरकत, खुज़ेमा (साहिबे नबुवत ईसा के मुकीम), किनाना, नज़्र, मालिक, फहर, गालिब, लुवे, मुर्रा, कलाब, कअब, कुसे, अब्देमनाफ, हाशिम, अब्दुल मुत्तलिब, अब्दुल्लाह, अबुतालिब (साहिबे नबुवत मुहम्मद[स.अ.व.] के मुकीम), मोहम्मद[स.अ.व.] अली, हसन, हुसैन, अली, मोहम्मद, जअफर, इस्माईल, मोहम्मद, अब्दुल्लाह, अहमद, हुसैन, अब्दुल्लाह मेहदी, मोहम्मद काइम, मन्सूर, मोइज़, अज़ीज़, हाकिम, ज़ाहिर, मुस्तनसिर, मुस्ताअली, मन्सूर और तैय्यब अलेहिस्सलाम सलामुल्लाह अलैहिम व सलवातुल्लाह।

मौलाई खांजीफीर साहिब[र.अ.] उदयपुर वाले की लिखी हुई एक किताब में आपने मौलाना इदरीस इमादुद्दीन उन्नीसवें दाईउल सतर की सनद से मौलाना तैय्यब[अ.स.] के बाद कायम होने वाले इमामों के ये नाम लिखे हैं। 1. अहमद 2. मोहम्मद 3. अब्दुल्लाह 4. हुसैन 5. मअद 6. निज़ार 7. हाशिम 8. मोहम्मद 9. अली। किसी किताब में 20 के लगभग नाम लिखे हैं जो ये हैं– 1. अहमद 2. मोहम्मद 3. अब्दुल्लाह 4. मोहम्मद 5. अली 6. हुसैन 7. मअद 8. निज़ार 9. हाशिम 10. मोहम्मद 11. अली 12. अबुतालिब 13. अली 14. अहमद 15. अली 16. इस्माईल 17. मअद 18. हसन 19. मोहम्मद 20. अहमद 21. अली[अ.स.] ।*

अब मौलाना तैय्यब[अ.स.] के बाद इसी तरह बाप के बाद बेटे ब–ज़रिया नस इमाम कायम होते रहे और इसी सिलसिले के आज इमामुज़्ज़मान मौजूद हैं और आपकी नस्ल में कयामत तक इमामते इस्तिकरारिया का सिलसिला कायम रहेगा। यहाँ तक कि तमाम औलियाउल्लाह अइम्मा के बाद काइमुल कयामत मेहदीउल उम्मत आएंगे। आपके सबब दोरुलसतर

* अब्दुल मजीद की हलाकत के बाद ज़ाहिर, फाइज़, आज़िद के बातिलाना कलाम के बाद सलाहुद्दीन अय्यूबी (उमवी) मिस्र शाम का हाकिम हुआ जो फातिमी इमामों के लिए जब्बार, ज़ालिम साबित हुआ। (पेज-२४)

खत्म होगा और दूसरा दोरुल कशफ शुरू होगा इस तरह अक्वार अद्वार होते रहेंगे। ये थी मुस्तकर इमामों के सिलसिले की ज़िक्र। मौलाना इब्राहीम खलीलुल्लाह[अ.स.] के दूसरे बेटे इस्हाक[अ.स.] थे जो मुस्तोदअ थे, उनके सिलसिले में याकूब[अ.स.], यूसुफ[अ.स.], लावा, यहूदा, अय्युब, मूसा कलीमुल्लाह साहिबे नबुवत, हारून, यूशअ, फिनहास, इलियास, दाऊद, सूलेमान, अशइया, उज़ेर, ज़करिया, याहया, साहिबे नबुवत ईसा रूहिल्लाह, शमऊन, अब्देबशाशी, जुलनून, हबीबुन्नजार, मुरवतरराहिब, उमेर, सरजीस[अ.स.] ये सब मुस्तोदइन अम्बियाकिराम अलैहिस्सलाम थे। ज़ाहिरी शरीअतों के निज़ामें हिदायत वाले हुदातेइज़ाम थे।

नबीये अकरम[स.अ.व.] ने फरमाया– ला इमामत फिल अखवेनि बादल हसनि वल हुसैन। ये भी फरमाया– अलहसनो वल हुसैनो इमामा हक्किन कामा अवकअदा व अबुहुमा खैरुन मिन हुमा। हसन और हुसैन के बाद कभी दो भाइयों में इमामत नहीं, हसन व हुसैन दोनों इमामे हक है चाहे उठे या बैठे (जिहाद करे या सुलह करे।) और इन दोनों के वालिद (अली[अ.स.]) इन दोनों से अफज़ल है। मतलब कि ये दोनों इमाम है और अली[अ.स.] वसी है जिनका मर्तबा इमामत के मर्तबा से ऊपर है, अअला है, अफज़ल है। इसी तरह मौलाना अब्दुल मुत्तलिब के बाद मौलाना अब्दुल्लाह, मौलाना अबुतालिब के बाद मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह[स.अ.व.] तशरीफ लाए। मोहम्मदुल मुस्तफा[स.अ.व.] का मर्तबा नबुवत व रिसालत का है, जो वसायत व इमामत से अअला है, और मौलाना अली[अ.स.] के बाद इमाम हसन[अ.स.] आए फिर हुसैन[अ.स.]। अब आप सय्युदश्शोहदा इमाम हुसैन[अ.स.] के बाद कयामत तक दो भाईयों में इमामत नहीं। ये अइम्मा किराम[अ.स.] अल्लाहसुब्हानहु के खुलफा है। इमामत सल्तनते इलाहियत, मुमिलकते रूहानिया, हुकुमते रब्बानिया, बाकिया दाइमा, जारिया–सारिया रहेगी। एक लम्हा भी ज़मीन इमाम से खाली नहीं रह सकती और ये इमाम ही मोहम्मदुल मुस्तफा[स.अ.व.] के हकीकी वारिस है।

फातिमी इस्माईली इक्कीसवें इमाम मौलानल तैय्यब[अ.स.] की ज़िक्र

आपके वालिद माजिद मौलानल मन्सूरुल आमिर बिएहकामिल्लाह[अ.स.] सन् 495 हिजरी में आपके वालिद माजिद मन्सूस मौलाना अबुल कासिम अहमदुल मुस्ताअली[अ.स.] की वफात के दिन अर्शे इमामत पर मुस्तवी हुए, हसन इब्ने सबाह निज़ारी बन गया मिस्ले शद्दाद की तरह मनगढ़त

इबाहत पर आया (यानि शरई हराम चीज़ों को मुबाह किया) इसलिए इमाम आमिर[अ.स.] के हुक्म से मारा गया। सन् 515 हिजरी में आपके वज़ीर बदरुलजमाली[र.अ.] (मुसन्निफः अलमजालिसुल मुस्तनसिरिया) शहीद किये गये। आपके फरमान से मौलातिना हुर्रतुल मलिका[र.अ.] और दाई याहया बिन मालिक[र.अ.] ने दाई ज़ोएब[क़ुद.] को सतर का पहला दाईउल मुतलक कायम किया। आप सन् 520 में वफात हुए। मौलातिना हुर्रतुल मलिका[र.अ.] इमाम आमिर[अ.स.] के फरज़न्द इमाम तैय्यब[अ.स.] की विलादत और नस के कागज़ को समझा और सबको समझाया। इमाम आमिर[अ.स.] ने एक कासिद शरीफ मोहम्मद बिन हैदरत के साथ ये कागज़ और एक पुराना रुमाल भेजा। शरीफ ये पुराने रुमाल को बेपरवाही से खुद अपने पास रहने दिया तो मौलातिना हुर्रतुल मलिका ने उसको पूछा कि इमाम[अ.स.] हमेशा कागज़ के साथ कुछ न कुछ हदिया भेजते हैं, तो क्या इस वक्त भी कोई तोहफा भेजा है? इस पर शरीफ वो पुराना रुमाल ले आया। ये रुमाल देखकर आप बहुत रोई। रोने का सबब ये बताया कि इमाम[अ.स.] ने अपनी शहादत की खबर की है। उधर मिस्त्र में इमाम[अ.स.] ने तरबूज व सेब पर चाकू से ज़ख्म जैसे करके सबको अपनी शहादत की खबर का इशारा किया मगर कोई समझा नहीं यहाँ तक कि आपके बाबुल अबवाब इब्ने मदयन[र.अ.] ने सबको समझाया। सन् 526 हिजरी ज़िल्काद की 26 वीं तारीख को आपकी शहादत हुई। (आपकी शहादत निज़ारिया के हमले से हुई थी।) शहादत के पहले आपने तमाम हाज़रीन के सामने अपने बेटे इमाम तैय्यब[अ.स.] पर नस की तजदीद की और अब्दुल मजीद को मुल्क व कस्र (महल) का हाफिज़ अमीन बनाया और फरमाया कि मेरे बेटे तैय्यब[अ.स.] को ये अमानत सौंप देना। और आपने अपने बाबुल अबवाब इब्ने मदयन[र.अ.] को अपने बेटे तैय्यब इमाम[अ.स.] के लिए मुस्तौदअ कफील बनाया और फरमाया मेरे बाद तुम्हारे दामाद अबुअली को बाबुल अबवाब बनाना। ये अम्र उनके पास मेरे बेटे के लिए अमानत होगा और वो भी मेरे बेटे के साथ मस्तूर हो जाए और उनकी हिफाज़त करे और इताअत करे।

★हर रसूल की आमद के बाद "शिर्रत" यानि शरई अहकाम की अदायगी में निशात कोशिश का दौर आता है। फिर सुस्ती शरीयत से बेएअतनाई गुमराही का दौर जिसको फतरत कहते है जिसमें लोग राहे हक को छोड़कर गुमराह हो जाते हैं और शरई अहकाम की अदायगी में बहुत सुस्त हो जाते हैं। हर शिर्रत के बाद आती है फतरत। (पेज-29)

इमाम मौलाना तैय्यब[अ.स.] काहिरा मोइज़िया में सन् 524 हिजरी के रब्बिउल आखिर की चौथी तारीख इतवार को पैदा हुए। तमाम बिलादे इमानिया में दुआत के ज़रिये और खास तौर से यमन में मौलातिना हुर्रतुल मलिका के ज़रिये नस और विलादत के खतूत पढ़े गये। "अन्नफूज़ुल फातिमी फी जज़ीरतुल यमन" नाम की किताब में जमालुद्दीन सरवर ने इमाम तैय्यब[अ.स.] की विलादत और अकीका की खबर लिखी है। लिखा है कि विलादत के बाद 14 दिन तक अकीका के कब्श (बकरा) को महलों में फिराया गया और चादहवें दिन अकीका हुआ। विलादत, अकीका और नस की खुशी में तमाम शहरों में खुशी के जश्न मनाए गये। इमाम तैय्यब[अ.स.] को लेकर बाबुल अबवाब काज़ी अबुअली ने दुआत के साथ इमाम आमिर[अ.स.] के हुक्म के मुताबिक काहिरा से निकल गये।

मिसर थयु अंधारु यकायक, सूं छे अजब अंधारा मा
सिधारा दीनी सूरज। यहाँ सी लैली हुदूद ना तारा मा।

शेख सादिक अली।

आप के सतर के बाद हाफिज़ अब्दुल मजीद ने इमामत का दावा कर दिया, अली इब्निल फज़्ल ने बगावत की, इमाम[अ.स.] के हुदूदेअक्रमीन, बाबुल अबवाब इब्ने मद्यन, रुसलान, अज़ीज़ी, कौन्स वगैरह शहीद कर दिये गये। 600 औरते मगरिबी शहरों की तरफ भाग निकली,* अब्दुल मजीद भी कैद कर लिया गया फिर छुड़ाया गया।' उसका इक्तदार मज़बूत होने लगा तो मौलातिना हुर्रतुल मलिका[र.अ.] ने उसके झूठे दावों को आश्कार किया और मौमिनों को उसकी गद्दारी से वाकिफ किया, उससे बराअत की और करवाई। और आप (मौलातिना हुर्रतुल मलिका) और दाई ज़ोएब[र.अ.] तय्यबी दआवत को मज़बूत और महफूज़ करते रहे। हुर्रतुल मलिका ने इमामी हुक्म से अव्वल दाई ज़ोएब[र.अ.] को यमन के साथ हिन्द और सिन्ध के मालिक बनाने के बाद पहली रजब सन् 531 हिजरी में वसीयत नामा लिखा। एक साल बाद शाअबान की 22वी तारीख सन् 532 हिजरी में आपकी वफात हुई तब आपकी उम्र 92 साल थी। सलामुल्लाह अलैहा! ज़िलजिबला में मखसूस जगह में आप को दफन किया गया।

ज़िलजिबला मा जइने सबा तू मुजरो करजे वो मर्तबा ने
दुआत जे ये उठारा कायम करी इमामी दावत ने।
सुलेहिया[र.अ.] बीबी पछे दुआतो थया इमाम न फरमान थी
इमाम तय्यब नी दावत पर थया तसद्दुक दिल जान थी।
छुड़ाया डूबा हुआ आलम ने। मजीदियों ना तूफान थी।
शुक्र छे कासिर हर शाकिर नो ये लोगो ना अहसान थी।
मुसहफि रब छे इमाम तय्यब[अ.स.] जिल्द दुआतो[र.अ.] मोहकम छे।
मुसहफ न चूमवा अगारी जिल्द नो बोसो अकदम छे।
हकिकी सूरज इमाम तय्यब[अ.स.], दुआत[र.अ.] तारा रोशन छे।
कुद्स ना माली इमाम तय्यब[अ.स.] दुआत[र.अ.] कुदसी गुलशन छे।
अज़्ल ना सिर छे इमाम तय्यब[अ.स.] दुआत[र.अ.] सिर ना मखज़न छे।
खुदा ना मस्कन इमाम तय्यब[अ.स.], दुआत[र.अ.] एहना मस्कन छे।
एक मिला छे बीजा मा आवी ये बे मा जे वस्ल करे
इल्म नी सूरत थई ते ने हासिल बाकी ये छे अमल करे।

शेख सादिक अली

किरानातुल फतरात*

मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह[स.अ.व.], आपसे गिनती करे तो यानि पहले रसूले करीम[स.अ.व.], दूसरे सय्यदुल वसीईन मौलाना अली[अ.स.] व इक्कीस इमाम[अ.स.] यानि कुल तेईस फिर बाद के सतर में, यमन में दुआते किराम 23 हुए फिर दअवत हिन्द की तरफ नक्ल हुई और हिन्द के 23 दाई हुए। दाई मौलाना मोहम्मद बदरुद्दीन की शहादत (सन् 1256 हिजरी) के बाद फतरत का दौर शुरू हुआ।

बहरहाल रमज़ानुल मुबारक की 23वी शब लैलतुल कद्र मिसाल फातिमा[अ.स.] की और आपकी फरज़न्दो में ब–ज़रिये इमामत बाकी ताकयामत। दोरुल कशफ (सतयुग) 50 हजार साल मलाइक के मानिंद सच्चे इन्सानों का दौर, दोरुल फितरत 3 हजार साल जिन्नात का दौर, फिर दोरुल सत्र 7 हज़ार साल शयातीन इबलीसियत का दौर जिसमें इबलीस को मोहलत मिली है कि वो चाहे उसको गुमराह करे मगर अल्लाह के खालिस बन्दो को गुमराह नहीं कर सकता जिसकी तादाद हज़ारों में एक ही होती है।

नबीये अकरम आदम सफीयुल्लाह[अ.स.] के मन्सूस, मख्सूस बेटे हाबील[अ.स.] को काबील लईन ने शहीद किया। दोरुल फितरत शुरू हुआ। यहाँ तक की हिब्तुल्लाह, शीस[अ.स.] का ज़हूर हुआ और आपकी कोशिश से इबलीसियत दूर हुई। नबीउल्लाह इदरीस[अ.स.] के ज़मान में फितरत आई, यहाँ तक की खुद आपने ब–ज़रिये अस्तुरलाब हक को ज़ाहिर किया। नूह नजीयुल्लाह के ज़मान में जबरदस्त इबलीसी तूफान उठा, यहाँ तक की आप अपने साथियों के साथ सफीने में सवार होकर नजात पाई और इबलीसी (हाम वाले) लोग गर्क हुए। आपके बाद जो फितरत (आद वाली) आई वो नबी हूद[अ.स.] से दूर हुई। आप के बाद समूद वाली फितरत फितनत सालेह नबीउल्लाह से, निमरुदी आग इब्राहीम खलीलुल्लाह से, शोएब नबी के ज़माने में फिरओनी फितनत मूसा कलीमुल्लाह से दूर हुई। उसी तरह एक के बाद दूसरी फितरत और फितनते, जाहिलीयत का दौर आया और उसके मुकाबिल औलियाउल्लाह, अम्बिया[अ.स.] की हिदायतें चालु लेकिन हक मगलूब और बातिल गालिब। मौलाना अली[अ.स.] का फरमान है कि फितनते तीन तरह की, फितनतुत सर्राए, फितनतुत दर्राए और फितनतुत तमहीस। इन तीनों फितनतों के बाद हमारी इतरत में से एक मर्द ज़ाहिर होंगे और तमाम उमूर को दुरुस्त करेंगे। फितनतुत सर्रा– नबीए अकरम[स.अ.व.] के बाद सकीफा वाली फितनत के जिसके असरात बदतरीन फितरात यहाँ तक की कर्बला मौअल्ला का हादसा। उमवी, मरवानी जब्बारों का जुल्म सितम। फितनतुत दर्रा– बनुल अब्बास के जब्बारों का बदतरीन दौर अइम्माए हक पर जुल्म की वजह से उनका मस्तूर होना यहाँ तक की मौलाना अब्दुल्लाह महदी[अ.स.] का ज़हूर। 270 साल तक इलाही दौलते फातिमी हुकुमत कायम हुई। फितनतुत तमहीस– 21 इमाम मौलाना तय्यब[अ.स.] का सतर में जाना। "लियुम'हिसल्लाहुल्लज़ीन' आमनु व यमहकल काफिरीन" ताकि अल्लाह सुब्हानहु मौमिनीन की तमहीस (साफ) करे और काफरीन की तमहीक करे (मिटाए)।

अब इंतज़ार उस मुबारक दिन की जिसका अली ए अअला[अ.स.] ने वादा फरमाया ताकि ज़मीन उसके रब के नूर से चमक उठे। "व अश्रकतिल अरदि बि नूरे रब्बिहा"

इमाम सादिक[अ.स.] और इमाम अहमदुल मस्तूर[अ.स.] के बयान जो अख्वानुस्सफा में आया है। अल्लाह सुब्हानहु हमको गुमराह करने वाली तमाम फितनतों से बचाकर इन फितरतों के अद्वार सिराते मुस्तकीम पर साबित रखे। आमीन!

अज़ा–ए–इमामी

सरो सीना पीटो के रोज़े महिन छे।
सलामी अज़ाऐ इमामे ज़मन छे।
गई मौसमि कुल जहाँ सी ऐ लोगों।
कहाँ बुलबलों ने कहाँ वो चमन छे।
कहाँ आबे कौसर ना ठंडा वो शरबत।
बहशते बरी ना कहाँ वो जमन छे।
कहाँ चश्महाए उलूमे लदुन्नी।
कहाँ फैज़े रहमत न वो अन्जुमन छे।
निकाले खुदा हमने दुनिया सी जल्दी।
आ परदेस मा कौने रहवानु मन छे।
गुनाहों सी दुनिया मा आवी पड़ा छे।
हकीकत जो पूछो तो जन्नत वतन छे।

हवे बाद आमिर[अ.स.] ना तय्यब[अ.स.] छे मौला।
ये तय्यब[अ.स.] सी नूरे इमामत जतन छे।
खुदा ना प्यारा छे अर्श ना तारा।
निगाह मा छे इक तन मगर पंजतन छे।
अजब नाम छे एहना अन्दर छे फातिम[अ.स.]
नबीयो अलीयो हुसैनो हसन छे।
इमामत ना जामा मा विहदत नी सूरत।
कि नाज़िल खुदा सी ये सूरत मा लन छे।
(लनतरानी)

ज़हूरे अइम्मत था मौसमे रबीअ ना।
गियासी कलन छे दिलो ने जलन छे।
सतर नी अंधारी रातों ना अन्दर।
दुआ अने बुका सी हमारो वलन छे।
इमामत ना सूरत छुपा छे ते दिन सी।
जिगर नी कड़ाई मा दिल नो तलन छे।
कहाँ ना खुदा ने कहाँ ना पयम्बर।
हरेक शख्स ने बस हवा सी वलन छे।
शरीयत ना जामा मा अहले सितम सी।
मज़ल्लत नी गरमी असफ नी कलन छे।
किलाबो ना दस्ते तसर्रुफ मा दुनिया
नैन सी छे बारिश जिगर मा जलन छे।
शहादत सी आमिर ना दरगाहे आलम
बसीरत सी देखो तो बैतुल हज़न छे।
लिखुं छुं कि हातिफ पुकारा फलक सी।
बराबर मोहम्मद[रुह.] तम्हारा सुखन छे।

'तन्जीमे इशाअते इस्लामी तअलीम' की शाओ करदा किताबों की फहरिस्त

1. माहे रमज़ान की फज़ीलत और रोज़े की फरज़ियत (हिन्दी)
2. अमर कहानी मौलाना कुतबुद्दीन शहीद[कुद्दसहु] (हिन्दी)
3. हिन्दी सहीफा मय 14 सूरते तर्जुमा के साथ
4. मय्यत के अहकाम
5 निकाह तलाक के अहकाम (हिन्दी)
6. इमाम इस्माईल[अ.स.] (उर्दु)
7. कुरआन मजीद की इस्माईली तफसीर (4 जिल्द में बोहरा गुजराती में)
8. अहसनुल कसस– आदम[अ.स.] से इमाम तक अम्बिया औलिया की तारीख
9. यासीन–इन्नल्लाह (अरबी–हिन्दी)
10. सनसनी खेज़ हकाइक (उर्दु)
11. इल्म ना मोतीजरो नसीहत की तशरीह
12. हैरतअंगेज़ इन्किशाफात
13. खमाइलुल रातिईन
14. रहनुमाए हज व ज़ियारात
15. मजमउल बहरेन (जिल्द अव्वल) शहाबुन नबवी व नेहजुल बलागा का तर्जुमा
16. मजमउल बहरेन (जिल्द सानी) नेहजुल बलागा व खुतुबाते फातिमिया का तर्जुमा व 100 फज़ीलते
17. नकाब कुशाई (असगर अली इंजीनियर पर तन्कीदी ज़ायज़ा
18. चाँद और रोज़ा, चाँद और खलाबाज़ और चंद मुफीद मज़ामीन
19. मौला अली की 100 फज़ीलते (उर्दु)
20. किताबतुत तौरात (अरबी के साथ उर्दु तर्जुमा)
21. दआइमुल इस्लाम (जिल्द अव्वल) बोहरा गुजराती
22. दआइमुल इस्लाम (जिल्द सानी) बोहरा गुजराती
23. इस्राईली इबरतनाक हदीसे (उर्दु तर्जुमा)
24. हयाते तय्यबा (शेख अहमद अली राज की सवानेह उम्री)

25. इस्बातुत तावील व हकीकत
26. मुताअतुन निसा (मुताअ कुरआन और हदीस की रोशनी में नाजायज खालिस ज़िना)
27. फातिमी खुतबात मय कुतबी व बदरी शहादत नामा
28. पंजतियात (दीवाने अहमद अली राज– अरबी)
29. 15 मुनाजात (इमाम ज़ैनुल आबिदीन की मुनाजातों का तर्जुमा)
30. निकाह तलाक मय विरासत के अहकाम
31. तीन लुकमान (मय ज़मीमा फखरी, खानवी व दाऊदी)
32. वज़कुर फिल किताबे इस्माईल (उर्दु)
33. कुरआन मजीद की इस्माइली तफसीर (तिलावत व तर्जुमा शेख अहमद अली राज सा. की आवाज़ में कैसेट सेट 141)

मिलने का पता

1. शेख अहमद अली राज, 66, डॉ. जाकिर हुसैन मार्ग, बोहरावाड़ी, उदयपुर
2. इमादुदीन अत्तरवाला, गुलिस्तान परफ्यूमर्स, पारधान मेन्शन, जे.जे. कॉर्नर, मुम्बई–03
3. प्रोफ. मेहदीहसन इनायत अली, 188, गुरूवार रोड, मालेगाँव (नासिक)–423203

दरख्वास्त

'मौला अली[अ.स.] की सौ फज़ीलतें' हिन्दी में भी लगभग तैयार है बस इसकी प्रिन्टिंग के लिए माली इमदाद की ज़रूरत है इसलिए सखी हज़रात से गुज़ारिश है कि तआवुन के लिए राब्ता कायम करें या फोन करें।

सज्जाद हुसैन खाड़ाघोड़ा वाला
फोन : 525216